

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 15, पाठक प्रतिक्रिया आलोचना

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

हमने व्याख्या के लिए पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण के बारे में बात करते हुए कुछ सत्र समाप्त किए। पिछले सत्र में, मैंने संकेत दिया था कि हम संचार के तीसरे पहलू के एक अलग पहलू पर आगे बढ़ेंगे, जो कि पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण है। हमने यह भी कहा कि संरचनावाद, जो पाठ-आलोचनात्मक या पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण के तहत विशिष्ट दृष्टिकोणों में से एक था, ने उत्तर-संरचनावाद को रास्ता दिया, जो संरचनावाद से परे चिंताओं को प्रकट करता है, और अक्सर उत्तर-संरचनावाद को अधिक उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोणों के साथ पहचाना जाता है। व्याख्याशास्त्र और बाइबिल व्याख्या।

उदाहरण के लिए, हालांकि व्याख्या के उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोणों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, जिन्हें अक्सर कई चीजों की विशेषता के रूप में देखा जाता है। मैं उनमें से केवल तीन पर प्रकाश डालूंगा। नंबर एक है बहुलवाद, किसी पाठ तक पहुंचने में व्याख्यात्मक बहुलवाद, यानी ज्ञान और अर्थ तक पहुंचना।

अर्थात्, कोई विश्वदृष्टिकोण नहीं है, कोई धार्मिक विश्वास नहीं है, वास्तविकता की कोई व्याख्या नहीं है जो सही के रूप में उभरती है, बल्कि एक पदानुक्रम के बजाय, एक समतल प्रभाव होता है जहां वास्तविकता की कोई व्याख्या या अर्थ नहीं है जो सही के रूप में उभरता है। अक्सर, उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार, अर्थ को अक्सर शक्ति के रूप में देखा जाता है और अक्सर यह दावा करने के लिए शक्ति के दुरुपयोग के रूप में देखा जाता है कि एक सही अर्थ है। इसका एक समतल प्रभाव है कि इसका कोई सही अर्थ या दृष्टिकोण या व्याख्या नहीं है।

दूसरा, उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण के तहत, उनमें जो चीजें समान हैं उनमें से एक यह है कि अर्थ को मूल्य-युक्त के रूप में देखा जाता है, अर्थात्, किसी पाठ की उद्देश्यपूर्ण, तटस्थ व्याख्या जैसी

कोई चीज नहीं होती है, लेकिन व्यक्ति अपनी स्वयं की पूर्वसूचनाएं लाता है और किसी का अपना दृष्टिकोण और बाइबिल पाठ की व्याख्या करने का उसका अपना दृष्टिकोण, वह क्या मूल्य रखता है, वह पाठ में क्या पाता है, वह क्या खोजना चाहता है। और फिर तीसरा, पढ़ने वाले समुदाय हमारे दृष्टिकोण को आकार देते हैं और जिस तरह से हम बाइबिल ग्रंथों की व्याख्या करते हैं। तो फिर, हमारी संस्कृति, जिन समुदायों से हम जुड़े हैं वे अनिवार्य रूप से हमारे बाइबिल पाठ को पढ़ने के तरीके को प्रभावित और निर्धारित करेंगे।

लेकिन उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण या व्याख्या के उत्तर-संरचनात्मक दृष्टिकोण के भीतर, मैं इस खंड में, विशेष रूप से एक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं जो कि पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण है, यानी, हमने कहा कि ऐतिहासिक और तार्किक रूप से फिर से अभ्यास करना व्याख्याशास्त्र और बाइबिल व्याख्या कैसे विकसित हुई है। हेर्मेनेयुटिक्स संचार की प्रक्रिया के तीन मुख्य पहलुओं के माध्यम से तार्किक और ऐतिहासिक रूप से आगे बढ़ गया है, जो ऐतिहासिक और लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण से शुरू होता है जो पाठ के उत्पादन और पाठ के निर्माण में लेखक की भूमिका पर जोर देता है। लक्ष्य लेखक के इच्छित अर्थ को उजागर करना था।

क्योंकि इसे अप्राप्य या अनावश्यक या यहां तक कि असंभव माना गया था, ध्यान पाठ-केंद्रित दृष्टिकोणों पर स्थानांतरित हो गया जहां पाठ स्वयं अर्थ का केंद्र बन गया। लेकिन फिर भी, इससे जुड़ी कुछ कठिनाइयों और किसी पाठ के केंद्रीय या अंतिम वाचन या अर्थ या पाठ के वस्तुनिष्ठ वाचन के रूप में उभरने में किसी पद्धति की विफलता के कारण, पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त हुआ जिसे हम अभी बात शुरू करेंगे। अर्थात्, अर्थ का प्राथमिक स्थान अब पाठक और पाठ की व्याख्या करने की पाठक की क्षमता है।

इसलिए, इस फोकस या व्याख्या के इस दृष्टिकोण के रूप में पाठक प्रतिक्रिया आलोचना को अक्सर कहा जाता है, इसमें कई दृष्टिकोण शामिल हैं जिन पर हम विचार करेंगे, कई संभावित दृष्टिकोण। लेकिन पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के सभी रूपों का मुख्य फोकस यह है कि पाठक पाठ को समझ सकें। और फिर, वस्तुनिष्ठ अर्थ प्रदान करने में पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण और यहां

तक कि लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण की विफलता अब पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण को जन्म देती है जहां अर्थ पाठ के साथ पाठक की बातचीत का परिणाम होना चाहिए।

पाठक ही पाठ का अर्थ समझता है। लेखक-केंद्रित के अनुसार, दूसरे तरीके से कहें तो, लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण के अनुसार, पाठ में लेखक द्वारा दिया गया जीवन था। लेखक पाठ के जीवन और पाठ के निर्माण के लिए जिम्मेदार था।

इसलिए लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ, पाठ, लेखक ने पाठ को जीवन दिया। पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण के अनुसार, पाठ का अपना एक जीवन होता है। लेकिन पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण के अनुसार, पाठ का तब तक कोई जीवन नहीं है जब तक पाठक पाठ को पढ़कर उसे जीवन न दें।

दूसरे शब्दों में, पाठक अर्थ निर्धारित करने, पाठ में अर्थ खोजने या यहां तक कि पाठ में अर्थ बनाने के लिए जिम्मेदार है। पाठ में क्या पाया जाता है यह निर्धारित करने के लिए पाठक जिम्मेदार है। इसलिए, पाठक प्रतिक्रिया आलोचना या पाठक प्रतिक्रिया व्याख्या के दृष्टिकोण।

फिर, इस दृष्टिकोण के तहत, अधिक से अधिक, पाठ में केवल अर्थ क्षमताएँ होती हैं। पाठ में केवल अर्थ की क्षमता है जिसे पाठक को अब खोजना या बनाना होगा। दूसरे शब्दों में, ऐतिहासिक दृष्टिकोण के तहत, विशेष रूप से लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण, लेकिन अधिक सटीक रूप से और अधिक ज्ञानोदय या तर्कसंगत दृष्टिकोण के लिए और भी पीछे जाने पर, पाठक को अक्सर एक उद्देश्यपूर्ण, लगभग एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक के रूप में देखा जाता था।

याद रखें कि हमने कुछ मॉडलों के बारे में बात की थी, पाठक का दिमाग खाली है या वह खाली स्लेट है, जो पाठ से संवेदी धारणा प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा है, या पाठक एक खाली, सूखे स्पंज की तरह है, जो शुद्ध आगमनात्मक के माध्यम से डेटा को सोखने की प्रतीक्षा कर रहा है। तर्क। कोई व्यक्ति केवल शुद्ध प्रेरण के साथ पाठ की व्याख्या कर सकता है, और उसकी व्याख्या

पाठ में पाई गई बातों के अनुरूप होगी। इसलिए लेखक को लगभग एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक के रूप में देखा गया।

जबकि पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण में, पाठक पाठ को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने में अधिक सक्रिय है और पाठ में अर्थ पैदा करने में एक सक्रिय एजेंट है। अब, अधिकांश इस बात से सहमत होंगे कि कम से कम दो हैं, और मैं शायद एक तीसरा दृष्टिकोण जोड़ूंगा जो पाठक प्रतिक्रिया आलोचना की श्रेणी में आ सकता है। और दो महत्वपूर्ण दृष्टिकोण जो उभरे हैं, कम से कम अधिकांश लोग स्वीकार करेंगे, पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के लिए दो संभावित दृष्टिकोण एक अधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण हैं, जैसा कि इसे अक्सर लेबल किया जाता है, और एक अधिक कट्टरपंथी दृष्टिकोण।

हम बस एक क्षण में उन पर गौर करेंगे। लेकिन मुझे लगता है कि एक तीसरा दृष्टिकोण भी है, और वह यह है कि पाठक प्रतिक्रिया आलोचना ऐतिहासिक पाठक पर ध्यान केंद्रित करना चुन सकती है, यानी मूल पाठक जिनके लिए पाठ का इरादा था। तो कोई यह प्रश्न पूछ सकता है कि यशायाह की पुस्तक के मूल पाठक, या राजाओं की पुस्तक के मूल पाठक, प्रथम और द्वितीय राजा, या मैथ्यू की पुस्तक के मूल पाठक, या गलातियों को पॉल का पत्र, क्या होगा? मूल पाठकों ने पाठ का क्या अर्थ निकाला होगा? उन्होंने इसे कैसे समझा होगा? तो उस परिप्रेक्ष्य से, पाठक प्रतिक्रिया आलोचना ऐतिहासिक पाठकों, पाठ के मूल पाठकों को शामिल कर सकती है, और पूछ सकती है कि उन्होंने इसे कैसे समझा होगा, और उन्होंने पाठ की व्याख्या कैसे की होगी।

तो यह पहली शताब्दी या ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी की पाठक प्रतिक्रिया आलोचना की तरह है, जो ऐतिहासिक पाठकों से प्रश्न पूछती है। हालाँकि, उनकी पाठक प्रतिक्रिया आलोचना में अधिक प्रमुख वह है जिसे कुछ लोगों ने अधिक रूढ़िवादी पाठक प्रतिक्रिया का नाम दिया है, जो अक्सर साहित्यिक आलोचक वोल्फगैंग इसर से जुड़ा होता है, और उन्होंने जो सुझाव दिया है उसे कुछ लोगों ने पाठ-निर्देशित पाठक प्रतिक्रिया के रूप में लेबल किया है। , या लगभग एक लेखक-निर्देशित पाठक प्रतिक्रिया आलोचना, या पाठ की व्याख्या करने का दृष्टिकोण। अर्थात् पाठ ही पाठक का मार्गदर्शन करता है कि पाठ को किस प्रकार पढ़ा जाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, इस बात पर बाध्यताएँ हैं कि पाठक पाठ के साथ क्या कर सकता है। तो इसर ने सोचा कि, हां, लेखक, पाठक अर्थ और अर्थ की खोज में शामिल हैं, और उन्हें रचनात्मकता का उपयोग करना चाहिए, लेकिन पाठ द्वारा ही बाधाएं लगाई गई हैं। इसर के अनुसार, पाठ में लेखक द्वारा छोड़े गए अंतराल होते हैं, जिन्हें पाठक को पाठ का अर्थ निकालने के लिए भरना होता है, और पाठक को उन अंतरालों को भरना होता है ताकि पाठ से अर्थ निकल सके।

लेकिन फिर, पाठ स्वयं ही यह कैसे होता है इसके लिए बाधाएं प्रदान करता है। पाठ स्वयं पढ़ने की प्रक्रिया के लिए सीमाएँ स्थापित करता है। इसर ने निहित पाठक, या आदर्श पाठक की धारणा भी पेश की, यानी, वह पाठक जो पाठ द्वारा ग्रहण किया जाता है जिसे भौतिक पाठक को पाठ को पढ़ने के लिए पहचानना चाहिए।

और फिर, कुछ लोगों ने इसे पाठ-निर्देशित पाठक प्रतिक्रिया आलोचना, या लेखक-निर्देशित पाठक प्रतिक्रिया आलोचना कहा है। यानी ऐसा नहीं है, पाठक पूरी तरह से स्वायत्त नहीं है, पाठक पाठ के साथ जो करना चाहता है वह करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। अर्थ और पढ़ना सभी के लिए मुफ्त नहीं है, या जो केवल देखने वाले की नज़र में है, बल्कि लेखक पाठक की ओर से रचनात्मक व्याख्या को आमंत्रित करता है।

यह कैसे काम कर सकता है इसका एक दिलचस्प उदाहरण, विशेष रूप से पाठ के अंतराल को भरने के संदर्भ में, किसी चीज़ को पढ़ने में इसका क्या अर्थ हो सकता है, जैसे कि ल्यूक अध्याय 2 की जन्म कथा, या तथाकथित क्रिसमस कहानी। और जब आप इसके बारे में सोचते हैं और आप वापस जाते हैं और इसे पढ़ते हैं, तो यह दिलचस्प है कि पाठ को समझने के लिए हमें कितने अंतराल भरने पड़े हैं। तो आप एक ऐसे पाठ से शुरू करते हैं जो ग्रीको-रोमन इतिहास के भीतर यीशु के जन्म की घटनाओं को रखता है, इसलिए यह उन दिनों में शुरू होता है जब सीज़र ऑगस्टस दुनिया का सम्राट था, और फिर पूरी दुनिया पर कर लगाने के लिए एक आह्वान किया जाता है उस समय।

और किरिनियस उस अवधि के दौरान सीरिया का गवर्नर भी था, इसलिए यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि निर्धारित करता है। लेकिन फिर यह पाठ बहुत तेजी से आगे बढ़ना शुरू कर देता है और कई कमियां छोड़ देता है जिन्हें पाठकों ने भर दिया है। इसकी शुरुआत यूसुफ के गलील से, नाज़रेथ शहर से यहूदिया तक, अंततः डेविड के शहर बेथलेहम में आने से होती है, और वह अपनी पत्नी मैरी के साथ आता है, जो बच्चे से गर्भवती है, लेकिन फिर अगली बात यह है, जबकि वे वहां थे, उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

यह आपको कुछ नहीं बताता, यह आपको इस बारे में कुछ नहीं बताता कि अंतराल कितना है या कितनी देर है, यह आपको इस बारे में कुछ नहीं बताता कि वे वहां कैसे पहुंचे। हम अक्सर कल्पना करके उन अंतरालों को भरते हैं, क्या मैरी और जोसेफ एक कारवां में सवार थे? क्या वे स्वयं गये थे? हम अक्सर मैरी के साथ गधे को ले जाते हुए जोसेफ की तस्वीर बनाते हैं। क्या मैरी ने तुरंत पहुंचने पर बच्चे को जन्म दिया? क्या वे वहाँ लम्बे समय से थे? पाठ हमें नहीं बताता, और हम अक्सर उन कमियों को भर देते हैं।

जब यह हमें बताता है कि बच्चा कपड़ों में लिपटा हुआ था और नांद में लेटा हुआ था, तो हमें यह नहीं बताया जाता कि वे उस नांद तक कैसे पहुंचे, हमें यह नहीं बताया जाता कि वह कहाँ है। फिर, हम विभिन्न परिदृश्यों का निर्माण करके अंतराल भरते हैं, कभी-कभी परंपरा के आधार पर, अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर, कि कहीं एक चरनी, एक खलिहान, या एक शेड था जहां मैरी और जोसेफ गए होंगे, लेकिन पाठ ऐसा नहीं करता है हमें बताएं कि उन्होंने ऐसा कब किया या उन्होंने ऐसा क्यों किया। पाठों में से किसी एक शब्द के गलत अनुवाद के कारण, हम अक्सर मैरी और जोसेफ को एक सराय, एक होटल में जाने की कल्पना करते हैं, लेकिन वहां कोई रिक्ति नहीं बची है, और हमें ठीक-ठीक यह नहीं बताया जाता है कि ऐसा क्यों है, लेकिन हम एक ऐसे परिदृश्य की कल्पना करते हैं जहां वे किसी खलिहान या अस्तबल में जाएँ जहाँ एक चरनी होती है जहाँ अंततः यीशु का जन्म होता है।

हालाँकि, दिलचस्प बात यह है कि जिस शब्द का अनुवाद किया गया है वह एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग ल्यूक में कहीं और अतिथि कक्ष को संदर्भित करने के लिए किया गया है। तो

अधिक संभावना यह है कि क्या यह संभव है कि मैरी और जोसेफ किसी रिश्तेदार के घर गए होंगे और अतिथि कक्ष में रुके होंगे? इसके अलावा, हमें यह नहीं बताया गया है, हालाँकि बच्चे को नाँद में रखा गया है, हमें यह नहीं बताया गया है कि वह कहाँ था, हमें यह नहीं बताया गया है कि वे पूरे समय उसी नाँद में रहे थे। हम अक्सर कल्पना करते हैं कि मैरी और जोसेफ पूरे समय चरनी में थे जब वे बेथलेहम में यीशु को जन्म दे रहे थे, लेकिन क्या यह संभव है कि वे अतिथि कक्ष में रहे होंगे, और जब जन्म देने का समय आया होगा, तो वे चले गए होंगे एकमात्र अलग-थलग जगह जो उन्हें मिल सकती थी, और वह एक चरनी होती, या मुझे खेद है, वह एक अस्तबल होती जिसमें यह चरनी, यह चारा रखने का कुंड होता।

कुछ पुरातात्विक खोजों से पता चला है कि वह बस एक कोठरी या घर के सामने झुकी हुई जगह की तरह रही होगी। तो फिर, हमें यह नहीं बताया गया कि क्या मैरी और जोसेफ ने पूरा समय वहीं बिताया था? क्या वे अतिथि कक्ष में थे? और फिर पाठ कहता है कि जब बच्चे को जन्म देने का समय आया, तो उसने एक बच्चे को जन्म दिया, उसे चरनी में लिटा दिया क्योंकि अतिथि कक्ष में जगह नहीं थी। क्या यह संभव है कि वे कुछ समय के लिए अतिथि कक्ष में रहे, और फिर जब संकुचन करीब आ गए और बच्चे को जन्म देने का समय हो गया, तो अतिथि कक्ष में अन्य व्यक्ति भी रहे होंगे, और वहां बहुत भीड़ थी, और वे चले गए एकमात्र स्थान जहां कोई गोपनीयता होती, और वह अस्तबल था।

तो फिर, हमें ठीक-ठीक नहीं बताया गया है। जब हम पाठ को पढ़ते हैं तो उसका अर्थ समझने के लिए बहुत सी कमियाँ होती हैं जिन्हें हम आवश्यक रूप से भरते हैं। और फिर, मेरा उद्देश्य यह सुझाव देना नहीं है कि हमें ल्यूक के सुसमाचार और कथा, जन्म कथा को कैसे पढ़ना चाहिए, बल्कि यह प्रदर्शित करना है कि पाठक के रूप में हम रचनात्मक रूप से अंतराल को कैसे भरते हैं और ल्यूक अध्याय 2 में कहानी को समझने का प्रयास करते हैं। पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के प्रति अधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कुछ उदाहरण देने के लिए, फिर से, मुख्य रूप से नए नियम के उदाहरणों का उपयोग करते हुए, रॉबर्ट फाउलर नाम के एक व्यक्ति, एक नए नियम के विद्वान, ने भोजन संबंधी आख्यान, 4,000 और 5,000 के भोजन का विश्लेषण किया है। मार्क

अध्याय 6 और 8 में, और वह इसका विश्लेषण उस पाठक के दृष्टिकोण से करता है जो पहली बार पाठ के पास आता है और पहली बार पाठ को पढ़ना कैसा होता है।

और मार्क के साथ-साथ अन्य गॉस्पेल में एक सामान्य दृष्टिकोण है, लेकिन भोजन संबंधी कथाओं के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण जहां यीशु 5,000 या ल्यूक 4 और 5,000 को खाना खिलाते हैं, उसे यूचरिस्टिक संदर्भ में पढ़ना है, जिसमें यूचरिस्टिक अर्थ हैं, कि प्रभु भोज का संदर्भ है। लेकिन फाउलर फिर से यह सवाल पूछना चाह रहे हैं कि पहली बार पढ़ने वाले पाठक के दृष्टिकोण से पाठ को पढ़ना कैसा लगता है ? और वह इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित करते हैं कि यूचरिस्ट या लॉर्ड्स सपर कथा के अंत तक, पढ़ने की प्रक्रिया में घटित नहीं होता है, और वह तब तक होता है जब तक कोई मार्क अध्याय 14 तक नहीं पहुंच जाता। इसलिए फाउलर के अनुसार, वह कहते हैं कि इसका आना नाजायज है पाठ को पढ़ना और इसे पहली बार पढ़ने वाले पाठक के नजरिए से पढ़ना, यूचरिस्टिक संदर्भ या यूचरिस्टिक सेटिंग से मार्क में 4,000 और 5,000 की फीडिंग को पढ़ना, क्योंकि यह पढ़ने की प्रक्रिया में बाद तक नहीं आता है।

एक अन्य उदाहरण यह होगा कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक एक आदर्श पाठक मानती है। ऐसा लगता है जैसे लेखक एक निश्चित पाठक को मानता है जिसे वह चाहता है कि पाठक, वास्तविक शाब्दिक पाठक, जिससे उसकी पहचान हो, और वह वह है जो पुराने नियम के निरंतर अंतरपाठीय संबंध में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ने में सक्षम है। तो आदर्श पाठक या रहस्योद्घाटन का सक्षम पाठक जिसे लेखक मानता है वह वह है जो पुराने नियम के पाठ से संबंध बना सकता है और वह पुराने नियम के भ्रम और पुराने नियम के कनेक्शन को समझ सकता है जो रहस्योद्घाटन की पुस्तक के भीतर पाए जाते हैं। .

और वास्तव में, कई बार लेखक प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में पुराने नियम के पाठ के प्रत्यक्ष संदर्भों में पाठक की योग्यता का निर्माण भी करता हुआ प्रतीत होता है। पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के प्रति अधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण का वर्णन करने का एक तरीका इसकी तुलना डॉट-टू-डॉट से करना हो सकता है। आप में से कुछ लोग कभी-कभी बच्चों की रंग भरने वाली किताबों से परिचित होंगे या कभी-कभी हमारे अखबारों में और अखबार के उन हिस्सों में जहां

आपको क्रॉसवर्ड पहेलियाँ या कार्टून मिलते हैं, आपको एक बिंदु-से-बिंदु मिल सकता है जहां आपको किताब में यह जगह मिलती है और वहां बिंदुओं की एक श्रृंखला होगी जिन्हें क्रमांकित किया गया है और आपसे बिंदुओं को जोड़ने के लिए कहा जाता है और फिर जो उभरता है वह एक प्रकार की तस्वीर है।

एक अधिक रूढ़िवादी पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण की तुलना डॉट-टू-डॉट करने से की जा सकती है। बिंदु वहां हैं लेकिन एक पाठक के रूप में आपको उन्हें जोड़ना है और संख्याएं उन्हें जोड़ने में आपका मार्गदर्शन करती हैं। शायद एक बेहतर सादृश्य यह हो सकता है कि एक रूढ़िवादी पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण के लिए, यह एक आदर्श सादृश्य नहीं है, लेकिन एक सादृश्य एक बिंदु-से-बिंदु हो सकता है जिसमें कुछ बिंदु क्रमांकित हैं लेकिन अन्य नहीं हैं, जिससे आपको थोड़ा सा पता चलता है उन्हें जोड़ने और सृजन करने की स्वतंत्रता की।

दूसरे शब्दों में, आपका मार्गदर्शन किया जाता है। आप क्या बना सकते हैं, इसमें कुछ बाधाएं हैं, लेकिन दिन के अंत में चित्र बनाने के लिए थोड़ी सी स्वतंत्रता भी है। दूसरे शब्दों में, आप जिस प्रकार का चित्र चाहते हैं, उसे नहीं बना सकते हैं, बल्कि इसके बजाय आप पाठ के भीतर जो खोजते हैं, उसमें आप स्वयं पाठ द्वारा निर्देशित होते हैं।

ताकि कुछ भी यूं ही न चला जाए. तो यह पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के प्रति अधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण है। अभी भी किसी पाठ को पढ़ने में अंतराल को भरने के लिए पाठक की भूमिका, पाठक की रचनात्मकता पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन फिर भी पाठक पाठ द्वारा निर्देशित या लेखक द्वारा निर्देशित क्या कर सकता है, इस पर प्रतिबंध लगा रहा है।

पाठकों की प्रतिक्रिया आलोचना के प्रति एक अधिक क्रांतिकारी दृष्टिकोण विशेष रूप से एक व्यक्ति, स्टेनली फिश नामक व्यक्ति से जुड़ा है। और स्टेनली फिश सबसे प्रसिद्ध है, पाठक प्रतिक्रिया आलोचना में आप जो भी पढ़ेंगे, आपका परिचय स्टेनली फिश से होगा, जो अपने काम शीर्षक, क्या इस कक्षा में कोई पाठ है? के लिए जाने जाते हैं। सामान्य पाठक को इसे इस तरह से

व्यक्त करना थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन यह इस दृष्टिकोण के मूल में है। अर्थात्, पाठक अर्थ का निर्माण करते हैं और इससे भी आगे बढ़कर, पाठक पाठ का निर्माण करते हैं।

अर्थात्, स्टैनली फिश के अनुसार, एक पाठ और अर्थ अपने आप में मौजूद नहीं है। इसलिए लेखक-केंद्रित दृष्टिकोणों के विपरीत, किसी लेखक द्वारा निर्मित कोई पाठ और अर्थ नहीं होता है। पाठ-केंद्रित दृष्टिकोणों के विपरीत, कोई पाठ मौजूद नहीं है, स्वायत्त पाठ जो अपने आप मौजूद है।

लेकिन इसके बजाय, कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के अनुसार, जैसा कि स्टैनली फिश ने वकालत की थी, कोई पाठ नहीं है। लेकिन इसके बजाय, पाठक पाठ बनाते हैं। इसलिए, उनके काम का शीर्षक, क्या इस कक्षा में कोई पाठ है? कक्षा अर्थ निर्माण के लिए, पाठ निर्माण के लिए जिम्मेदार है।

तो अर्थ निश्चित रूप से देखने वाले या पाठक की नजर में है। यह पाठक ही हैं जो न केवल पाठ का अर्थ समझते हैं, बल्कि वे वास्तव में पाठ का निर्माण भी करते हैं। वे निर्धारित करते हैं कि वे पाठ के साथ क्या करते हैं या व्याख्या में क्या करते हैं।

डॉट-टू-डॉट की सादृश्यता का उपयोग करने के लिए जिसे हमने पिछले एक में उपयोग किया था, यदि एक रूढ़िवादी पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण की तुलना एक डॉट-टू-डॉट से की जा सकती है जिसमें आपको उन्हें जोड़ने के तरीके के बारे में मार्गदर्शन करने के लिए कुछ नंबरिंग होती है, तो एक रेडिकल पाठक की प्रतिक्रिया में बिंदु-से-बिंदु, बिखरे हुए बिंदु होंगे जिनमें कोई संख्या नहीं होगी, आप जो करना चाहते हैं उसके अनुसार आप बस अपनी तस्वीर बना सकते हैं। या किसी अन्य सादृश्य की तुलना करने का दूसरा तरीका इंकब्लॉट परीक्षण हो सकता है, जहां कोई इसे देखता है और पूछा जाता है कि उसने क्या देखा। स्याही के धब्बों की इस श्रृंखला में आप क्या देखते हैं? अक्सर यह देखने वाले की नज़र में होता है, जो इसे पढ़ रहा है।

तो एक पाठ को बिखरे हुए बिंदुओं के एक समूह के रूप में देखा जा सकता है जिसे कोई व्यक्ति अपनी पसंद के अनुसार जोड़ सकता है। तो जिस तरह से आप उन्हें जोड़ते हैं वह उस तस्वीर को निर्धारित करेगा जो बनाई गई है। इसलिए अपने आप में बिंदुओं का कोई मतलब नहीं है जब तक कि आप उन्हें जोड़कर एक चित्र न बना लें।

इसकी तुलना में जब हमने कई सत्र पहले ज्ञानोदय और बुद्धिवाद और मानवीय तर्क पर जोर देने की अवधि में हेर्मेनेयुटिक्स की कुछ ऐतिहासिक जड़ों को देखा था, तो व्याख्या को अक्सर किसी वस्तु पर महारत हासिल करने वाले विषय के रूप में देखा जाता था। विषय, जो दुभाषिया है, और वस्तु, जो पाठ है, के बीच एक विभाजन था। वाचन पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के तहत, विषय और वस्तु, यानी पाठक और पाठ के बीच का यह विभाजन समाप्त और विघटित हो जाता है।

इसके बजाय, पाठ अधिक हो जाता है, एक अन्य सादृश्य का उपयोग करने के लिए, एक पाठ अधिक दर्पण जैसा हो जाता है। यह बस यह दर्शाता है कि मैं कौन हूँ और मैं पाठ में क्या देखना चाहता हूँ। यह बस यह दर्शाता है कि मैं चीजों को कैसे समझता हूँ।

यह मेरे अपने दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसे मैं पाठ में लाता हूँ। तो स्टेनली फिश के लिए एक इकाई के रूप में पाठ, एक अलग वस्तु के रूप में पाठ, तस्वीर से बाहर हो जाता है। हम पहले ही कह चुके हैं कि यह दृष्टिकोण, एक अर्थ में, इमैनुएल कांट द्वारा पहले से ही अनुमानित है।

हमने व्याख्याशास्त्र के अपने कुछ ऐतिहासिक अध्ययन और व्याख्या में कांट द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बात की। लेकिन एक मायने में, यह कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया आलोचना इमैनुएल कांट की अंतर्दृष्टि को उसके तार्किक और चरम निष्कर्ष तक ले जाती है। यानी, हमने कहा कि कांट ने कहा कि हम जो कुछ भी जान सकते हैं, उसे उन्होंने घटना कहा है।

अर्थात्, हम केवल यह जान सकते हैं कि हम चीजों को कैसे समझते हैं। हम किसी चीज़ को उस रूप में नहीं जान सकते जैसे वह वास्तव में है। हम किसी चीज़ को उस रूप में नहीं जान सकते जैसे वह अपने आप में है।

लेकिन ज्ञान उन ग्रिडों और श्रेणियों के माध्यम से फ़िल्टर किया जाता है जो पहले से ही दिमाग में मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, कांट के लिए, तब कोई निश्चित नहीं हो सकता था कि किसी की समझ और ज्ञान आवश्यक रूप से वस्तुनिष्ठ रूप से सटीक रूप से सहसंबद्ध हो कि कोई वस्तु वास्तव में कैसी थी। इसलिए फिर से, जब मैं इस पुस्तक को देखता हूँ, तो मैं निश्चित नहीं हो पाता कि यह वास्तव में क्या है, बल्कि केवल यह जानता हूँ कि मैं इसे कैसे समझता हूँ।

इसके बारे में मेरा ज्ञान, इसके बारे में मेरी धारणा ग्रिड और मेरे दिमाग की श्रेणियों के माध्यम से फ़िल्टर की जाती है। अब, कांट के लिए, उन्हें लगता है कि आम तौर पर मनुष्यों में समान, वे सार्वभौमिक, समान श्रेणियाँ होती हैं जो उन्हें समझने और समझने की अनुमति देती हैं। लेकिन एक मछली, एक कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया आलोचना इसे अपने तार्किक चरम पर ले जाती है और उन्हें सुझाव देती है क्योंकि चीजें इसलिए नहीं होती हैं क्योंकि हम किसी चीज़ को उसके बारे में और उसके बारे में नहीं जान सकते हैं।

स्टैनली फिश ने कहा, तब हम किसी पाठ को उस रूप में नहीं जान सकते जैसा वह वास्तव में है। लेकिन इसके बजाय, इसके बारे में हमारी समझ पूरी तरह से इसके बारे में हमारी धारणा से निर्धारित होती है। और इसके अलावा, हालांकि, उन्होंने सुझाव दिया कि हर कोई, हर पाठक चीजों को अलग तरह से समझता है।

इसलिए मछली के अनुसार प्रत्येक दुभाषिया, प्रत्येक दुभाषिया में चीजों को अलग-अलग तरीके से देखेगा, उस परिप्रेक्ष्य के अनुसार जो वे पाठ में लाते हैं। फिर, पाठ एक दर्पण की तरह है जो वही दर्शाता है जो मैं पहले से ही पाठ में ला रहा हूँ। फिश के अनुसार, चूँकि हम पाठ को केवल एक पाठक के रूप में देखते हैं, वह कहेगा कि व्याख्या पाठ को आगे बढ़ाती है, पाठ पहले मौजूद नहीं है, और फिर हम इसे पढ़ते हैं, वह कहेगा कि व्याख्या पाठ को आगे बढ़ाती है।

इसलिए यह सुझाव देना कि पाठ का एक सही अर्थ है जिसे मैं व्याख्या के उचित तरीकों को लागू करके प्राप्त कर सकता हूँ, उनके लिए सत्तावादी से सत्तावादी है। आप मुझे यह नहीं बता सकते

कि मैं पाठ के साथ क्या कर सकता हूँ। लेकिन इसके बजाय, एक पाठक के रूप में, मैं अर्थ पैदा करता हूँ।

उदाहरण के लिए, एक, कोई सुझाव दे सकता है कि प्रकाशितवाक्य 20 की व्याख्या करने के लिए अलग-अलग सहस्राब्दी दृष्टिकोण, और छंद एक से छह तक, पाठकों को वह ढूंढने का परिणाम है जो वे चाहते हैं। इसलिए पाठक पाठ का अर्थ समझते हैं, और कोई भी व्याख्या सही नहीं होती। इसलिए इस दृष्टिकोण के अनुसार, सहस्राब्दी मार्ग की कोई भी व्याख्या सही नहीं है या लेखक की मंशा से जुड़ी नहीं है।

अब, एक स्पष्ट प्रश्न जो यह दृष्टिकोण उठाता है वह यह है कि क्या इसकी कोई सीमाएँ या बाधाएँ और अर्थ हैं या क्या यह केवल सभी के लिए मुफ्त है या कुछ भी चलता है? स्टैनली फिश ने सुझाव दिया कि आकाश की सीमा नहीं है, और वहाँ कुछ भी नहीं जाता है, उन्होंने सुझाव दिया कि सही व्याख्या के लिए बाधाएं हैं। लेकिन सवाल यह है कि बाधाएं क्या हैं? सही व्याख्या के मानदंड क्या हैं? क्या व्याख्या को निर्देशित या बाधित करता है? स्टैनली फिश के अनुसार, इसका उत्तर व्याख्यात्मक समुदाय था जिससे कोई संबंधित होता है। तो जिस समुदाय से मैं संबंधित हूँ वह पाठ तक पहुंचने का सही तरीका निर्धारित करता है, या उन मूल्यों और दृष्टिकोणों, विश्वासों को निर्धारित करता है जिन्हें मैं पाठ में लाऊंगा, और मैं इसे कैसे पढ़ूंगा।

तो हमारा पढ़ना बस एक समुदाय की मान्यताओं, और एक समुदाय के मूल्यों, और उनकी रुचि, और पाठ के प्रति उनके दृष्टिकोण का विस्तार है। तो एक पाठ का सही वाचन फिर से है, वह नहीं जो लेखक के इरादे के अनुरूप हो, वह नहीं जो पाठ के अनुरूप हो, बल्कि वह जो व्याख्यात्मक समुदाय के अनुरूप हो और निर्धारित हो, जिससे मैं संबंधित हूँ। और फिर, कोई यह पूछ सकता है कि क्या कैल्विनवादी हिब्रू छह को एक निश्चित तरीके से क्यों पढ़ते हैं? या क्या इसीलिए सहस्राब्दिवादी या पूर्वसहस्राब्दिवादी प्रकाशितवाक्य 20 को एक निश्चित तरीके से पढ़ते हैं? क्योंकि जिस समुदाय से वे आते हैं वह यह निर्धारित करता है कि उन्हें पाठ में क्या मिलेगा।

कुछ उदाहरण देने के लिए, बहुत, बहुत संक्षेप में एक कट्टरपंथी दृष्टिकोण का अर्थ है एक प्रतिक्रिया आलोचना को पढ़ना। कई व्याख्याकार केवल पढ़ने में रुचि रखते हैं, उदाहरण के लिए, मार्क्सवादी विचारधारा के प्रकाश में पैगंबर जैसे पुराने नियम के ग्रंथ। फिर, वे लेखक के अनुसार पाठ के ऐतिहासिक अर्थ को स्थापित करने की कोशिश में रुचि नहीं रखते हैं, लेकिन वे आधुनिक विचारधारा और आधुनिक सोच को लागू करने और उसे बाइबिल पाठ में पढ़ने में काफी खुश हैं।

या उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में वापस जाने के लिए एक और दिलचस्प उदाहरण, पिता, उड़ाऊ पुत्र और बड़े बेटे को सिगमंड फ्रायड की आईडी, अहंकार और सुपररेगो के अनुरूप एक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण में देखा जाता है। और फिर, लक्ष्य यह नहीं है कि लेखक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या पाठ की संरचना के प्रकाश में इस पाठ का सही अर्थ क्या है, बल्कि लक्ष्य केवल पाठक द्वारा पाठ में अर्थ पैदा करना है। और इसलिए जब इस दृष्टिकोण को अक्सर चरम पर ले जाया जाता है, तो आपको बाइबिल पाठ का पाठ कभी-कभी बहुत अलग और कभी-कभी हमारे लिए अजीब लगता है।

तो हमें मूल्यांकन के माध्यम से इस दृष्टिकोण के बारे में क्या कहना चाहिए, दोनों प्रतिक्रिया आलोचना को पढ़ने के लिए अधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण के बारे में सोच रहे हैं, लेकिन प्रतिक्रिया आलोचना को पढ़ने के लिए विशेष रूप से अधिक कट्टरपंथी दृष्टिकोण में भी। मुझे ऐसा लगता है कि दृष्टिकोण की व्यक्तिपरक प्रकृति, कभी-कभी अनियंत्रित प्रकृति, विशेष रूप से अधिक कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण निश्चित रूप से बाइबिल पाठ को भगवान के प्रेरित शब्द के रूप में देखने के विपरीत हैं, जहां भगवान एक अर्थ संप्रेषित करने का इरादा रखते हैं। अपने पाठकों से, जहां वह हमसे समझने की अपेक्षा करता है, वहीं वह हमसे आज्ञाकारिता में उत्तर देने की अपेक्षा करता है। कट्टरपंथी दृष्टिकोण जो पाठ में अर्थ को पूरी तरह से पाठक की संपत्ति के रूप में सापेक्ष बनाते हैं, मुझे बाइबिल पाठ के साथ विरोधाभासी लगता है, पाठ को अपने लोगों के लिए भगवान के शब्द के रूप में समझना।

भगवान अपने लोगों से संवाद करने के लिए इतिहास में अभिनय करते हैं और उम्मीद करते हैं कि वे आज्ञाकारिता में जवाब देंगे। तो पाठक प्रतिक्रिया आलोचना द्वारा उठाए गए प्रश्नों में से एक यह है कि क्या मेरे बाहर कोई अर्थ है जिसे खोजने के लिए मैं जिम्मेदार हूं? क्या पाठ एक दर्पण है जो केवल वही दर्शाता है जो मैं पाठ में लाता हूं, या पाठ एक खिड़की की तरह है जिसमें कोई अर्थ है जिसे मैं खोज सकता हूं? खिड़की कितनी भी गंदी क्यों न हो, कितनी भी टूटी हुई, कितनी भी धुंधली क्यों न हो, मैं अभी भी इसके माध्यम से देख सकता हूं और मेरे बाहर अभी भी एक अर्थ है जिसे भगवान अपने लोगों से खोजने और आज्ञाकारिता में उचित प्रतिक्रिया देने की उम्मीद करते हैं। दूसरा, कई मूल्यांकनों के अनुसार, पाठक की प्रतिक्रिया आलोचना और व्याख्या के प्रति फिश का कट्टरपंथी दृष्टिकोण, इसका हिसाब नहीं देता है और न ही यह बताता है कि किसी पाठ को पढ़ने के परिणामस्वरूप कोई वास्तव में अपने दिमाग और परिप्रेक्ष्य को कैसे बदल सकता है।

यदि पाठ केवल एक दर्पण है जो प्रतिबिंबित करता है कि मैं इसमें क्या लाता हूं और मैं इसके साथ जो चाहता हूं वह कर सकता हूं, तो यह कैसे होता है कि पाठ को पढ़ने के परिणामस्वरूप कुछ पाठक बदल जाते हैं और रूपांतरित हो जाते हैं? यहां तक कि यह प्रश्न भी उठता है कि आखिर पाठ ही क्यों? कोई लेखक पाठ क्यों लिखेगा? आखिर एक पाठ क्यों, यदि यह सब एक दर्पण है जो दर्शाता है कि मैं क्या सोचता हूं और मैं इसमें क्या लाता हूं और वह अर्थ और व्याख्या जो मेरे पास पहले से ही है। इसके संबंध में, आप न केवल यह कैसे समझाते हैं कि पाठक कैसे परिवर्तित होते हैं, बल्कि यह भी बताते हैं कि लोग, व्याख्यात्मक समुदाय की भाषा का उपयोग कैसे करते हैं, कोई भी व्याख्यात्मक समुदायों और व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों को कैसे बदल सकता है या बदल सकता है? ऐसा लगता है कि फिश की कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया आलोचना भी उस नई अंतर्दृष्टि का हिसाब नहीं दे सकती जो तब प्राप्त होती है जब कोई पाठ पढ़ता है। तीसरा, व्याख्यात्मक समुदायों के बाहर, किसी पाठ के अच्छे या बुरे पढ़ने या अच्छे या उससे भी बेहतर पढ़ने का मूल्यांकन करने का कोई तरीका प्रतीत नहीं होता है।

वास्तव में, स्टेनली फिश के दृष्टिकोण के तहत, एक कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण के तहत, एक समुदाय आत्म-आलोचनात्मक कैसे है? क्या किसी समुदाय के लिए अपने और अपने

दृष्टिकोण और अपने दृष्टिकोण के प्रति आलोचनात्मक होने की कोई गुंजाइश है? क्या किसी अन्य पाठक समुदाय या किसी पाठ के लिए पाठक के व्याख्यात्मक समुदाय को चुनौती देने का कोई तरीका है? क्या अच्छे या बुरे व्याख्यात्मक समुदाय हैं? क्या अच्छी या बुरी अंतर्दृष्टियाँ और पाठन और व्याख्यात्मक प्रथाएँ हैं? नंबर चार, एक अंतिम बिदाई विचार की तरह, पाठकों की प्रतिक्रिया है, आलोचक, दिलचस्प बात यह है कि, समझने और अपने निष्कर्षों को संप्रेषित करने के लिए लिखते हैं। यद्यपि संभवतः कोई यह पूछ सकता है कि क्या स्टेनली फिश सुसंगत थी और उसके पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण को उसके अपने कार्यों पर लागू किया जा सकता था और उसकी इच्छा के अनुसार व्याख्या की जा सकती थी, ताकि शायद मैं पाठक दृष्टिकोण से स्टेनली फिश के कार्यों को पढ़ सकूँ जो वास्तव में लेखक के इरादे की पुष्टि करता हो बाइबिल के पाठों की व्याख्या और दृष्टिकोण करने का एक सही तरीका है। लेकिन क्या बाइबिल के पाठों में पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण का कोई योगदान है? विशेष रूप से पुराने और नए टेस्टामेंट की व्याख्या करने में पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण का क्या योगदान हो सकता है? सबसे पहले, मुझे लगता है कि पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण ने हमें याद दिलाया है कि हम बाइबिल पाठ के तटस्थ, वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक और निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं हैं।

हम फिर से शुद्ध आगमनात्मक व्याख्याकार नहीं हैं, बस डेटा को सोखने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वस्तुनिष्ठ व्याख्याकार केवल हमारी खाली स्लेटों पर बाइबिल के पाठ को लिखने और अंकित करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन इसके बजाय, हम पाठ पर उन प्रभावों, पूर्वधारणाओं, दृष्टिकोणों और प्रतिबद्धताओं के साथ आते हैं जो पाठ को पढ़ने के हमारे तरीके को प्रभावित करते हैं। हम उन समुदायों और परंपराओं से जुड़े हैं जो किसी पाठ को पढ़ने के तरीके को प्रभावित करते हैं।

हालाँकि, पूछने योग्य प्रश्न यह है कि क्या ये निर्धारक हैं? क्या ये आवश्यक रूप से पाठ को देखने के हमारे तरीके को विकृत करते हैं? क्या यह असंभव है, इसलिए, क्या मेरे बाहर कोई अर्थ नहीं है जो मेरे सोचने के तरीके को प्रभावित और परिवर्तित नहीं कर सकता है? क्या यह अनिवार्य रूप से, मेरे दृष्टिकोण, मेरे मूल्य, मेरी अपनी पृष्ठभूमि इत्यादि, क्या यह अनिवार्य रूप से मेरे पाठ पढ़ने के तरीके को प्रभावित करेगा? लेकिन इसके बजाय, पाठ पाठकों को चुनौती दे सकता है

और बदल सकता है। हम अपने से बाहर भी अर्थ खोज सकते हैं। हम अपने दृष्टिकोण और अपनी अंतर्दृष्टि से इतने विवश नहीं हैं कि हम अपने से बाहर अर्थ नहीं ढूँढ सकें।

अर्थात्, पाठ केवल एक दर्पण नहीं है जो यह दर्शाता है कि मैं पाठ में क्या लाता हूँ और मेरी व्याख्या को प्रतिबिंबित करता है। लेकिन इसके बजाय, यह एक ऐसी खिड़की है, जो फिर चाहे कितनी भी धुंधली क्यों न हो, कितनी भी टूटी हुई या गंदी क्यों न हो, फिर भी हमें अपनी दुनिया से बाहर किसी और दुनिया और अर्थ को देखने और उसमें अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की अनुमति देती है। पाठक प्रतिक्रिया आलोचना की दूसरी अंतर्दृष्टि यह होगी कि पाठक व्याख्यात्मक प्रक्रिया में शामिल है।

पाठक प्रतिक्रिया आलोचना हमें फिर से याद दिलाती है कि पाठक केवल किनारे पर बैठा एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं है जो बस देख रहा है कि क्या हो रहा है, बल्कि पाठक सक्रिय है, पाठ में अर्थ खोजने में सक्रिय रूप से शामिल है। पाठक सक्रिय रूप से पाठ के साथ संवाद में संलग्न होता है। और इसलिए, पाठक का लक्ष्य कुछ मायनों में पाठ में निहित पाठक के साथ, उस आदर्श पाठक के साथ खोज और पहचान करना है जिसे पाठ स्वयं मानता है, जिसे लेखक मानता है।

हमारा लक्ष्य उसके साथ पहचान बनाना है, न केवल निष्क्रिय पर्यवेक्षक बनना, बल्कि केवल पाठ में वह खोजना भी नहीं है जो मैं पहले से ही इसमें ला रहा हूँ। यानी संचार नहीं हो पाता। कुछ मामलों में, संचार तब तक नहीं होता जब तक संचार प्रक्रिया के तीनों पहलू घटित नहीं हो जाते।

लेखक एक पाठ का निर्माण कर रहा है, लेकिन एक पाठक उसे पढ़ रहा है। इसीलिए लेखक पाठक को कुछ ऐसी बात बताने के लिए लिखते हैं जो उन्हें समझ में आए और उचित लगे। तो, एक लिहाज से, पाठक द्वारा पाठ की व्याख्या और अर्थ निकाले बिना संचार नहीं होता है।

तीसरी अंतर्दृष्टि जो मैं पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के बारे में सोचता हूँ वह हमें विनम्रता की आवश्यकता की याद दिलाती है। पाठक की प्रतिक्रिया आलोचना पाठक में विनम्रता पैदा कर

सकती है। यह सोचने के बजाय कि मेरे पास किसी तरह है, मैं वस्तुनिष्ठ रूप से डेटा को अवशोषित कर सकता हूँ और एक ऐसी व्याख्या के साथ आ सकता हूँ जो पूरी तरह से और स्वचालित रूप से उस अर्थ से मेल खाती है जो लेखक ने पाठ में रखा है।

पाठक की प्रतिक्रिया मुझे विनम्रता के साथ व्याख्या करने की आवश्यकता की याद दिलाती है, अपनी अदूरदर्शिता के खतरे को पहचानने और पाठ में मेरे द्वारा लाई गई धारणाओं को पहचानने की। यह मुझे अन्य दृष्टिकोणों और अन्य पाठनों को सुनने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता की याद दिलाता है जो मेरे दृष्टिकोण को चुनौती दे सकते हैं। यह मुझे पाठ द्वारा चुनौती दिए जाने के लिए तैयार रहने और एक पाठक के रूप में, विशेष रूप से पाठ के प्रकाश में और पाठ पढ़ने वाले अन्य लोगों के लिए तैयार रहने के लिए कहता है, ताकि मुझे अपने स्वयं के व्याख्यात्मक बायोपिया पर काबू पाने और अन्य को देखने के लिए तैयार होने में मदद मिल सके। पाठ में परिप्रेक्ष्य जो मेरे स्वयं के पढ़ने में अंधे स्थानों को उजागर करने में मदद कर सकते हैं, पाठ पर अपने स्वयं के दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि और मूल्यों को थोपने की मेरी अपनी प्रवृत्ति को उजागर कर सकते हैं।

नंबर चार, और अंत में जहां तक योगदान की बात है, मुझे लगता है कि एक महत्वपूर्ण योगदान यह अनुस्मारक है कि पाठक प्रतिक्रिया दृष्टिकोण हमें ऐतिहासिक पाठक की भूमिका और निहित पाठक पर ध्यान केंद्रित करने की याद दिलाकर मदद कर सकते हैं, कि अर्थ की सीमाएँ हैं। मुझे पाठ में जो मिलता है उसकी कुछ सीमाएँ हैं। ऐतिहासिक पाठक, ऐतिहासिक पाठक पर ध्यान केंद्रित करने से हमें यह पता लगाने में मदद मिल सकती है कि लेखक अपने मूल संदर्भ में पाठ के साथ क्या करना चाहता है।

निहित पाठक पर ध्यान केंद्रित करने से हमें यह पहचानने में मदद मिल सकती है कि पाठक ने पाठ में क्या माना है, आदर्श पाठक जिसे लेखक मानता है कि हम उसके साथ भाग लेंगे और उसके साथ जुड़ेंगे। तो उस परिप्रेक्ष्य से और उन सुझावों को देखते हुए, मुझे लगता है कि पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के पास कुछ मामलों में योगदान करने के लिए बहुत कुछ है जब बाइबिल पाठ की व्याख्या करने की प्रक्रिया पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाता है और सावधानीपूर्वक

नियंत्रित किया जाता है। केवल यह संक्षेप करके निष्कर्ष निकालना कि पाठक का दृष्टिकोण कैसा दिख सकता है, पाठक का दृष्टिकोण कैसा दिख सकता है, या पाठ के लिए उपयुक्त पाठक दृष्टिकोण क्या हो सकता है।

सबसे पहले, पाठकों के रूप में बाइबिल के पाठ को देखते समय, हमें उन धारणाओं और पूर्वकल्पनाओं को पहचानना चाहिए जो हम पाठ में लाते हैं और उन लोगों की संभावना है जो पाठ को देखने के तरीके को विकृत और प्रभावित करते हैं, अच्छे और बुरे दोनों को प्रभावित करते हैं। मैंने पहले ही सुझाव दिया है कि किसी पाठ की व्याख्या करने के लिए कई ईसाइयों की एक आम प्रतिक्रिया यह है कि, ठीक है, मैं बस बैठ जाता हूं और पाठ पढ़ता हूं। मैं इस पर खुले दिमाग से आया हूं और बिना किसी पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा के पाठ पढ़ता हूं।

मैंने बस पाठ को बोलने दिया। फिर, उस दृष्टिकोण के साथ कठिनाई यह है कि इसमें संभवतः पाठ को विकृत करने का बहुत अधिक खतरा है क्योंकि उस व्यक्ति को शायद इस बात की जानकारी नहीं होगी कि उसकी धारणाएं, पूर्वनिर्धारितताएं और प्रभाव और मूल्य वास्तव में उनके पढ़ने के तरीके पर कैसे प्रभाव डालेंगे। टेक्स्ट। एक पाठक का दृष्टिकोण इस अहसास के साथ शुरू होना चाहिए कि हम व्याख्यात्मक समुदायों के हिस्से के रूप में मान्यताओं और मूल्यों और पूर्वधारणाओं के साथ पाठ में आते हैं और यह पाठ को पढ़ने के तरीके को प्रभावित करेगा।

यह हमें विकृति की संभावना या यहां तक कि किसी पाठ को पढ़ने के तरीके में कैसे उत्पादक हो सकता है, इसकी संभावना से अवगत होने की अनुमति देता है। जैसा कि हम बाद के सत्र में बाद में देखेंगे, कभी-कभी मुझे यकीन हो जाता है कि कुछ लोग हैं, विशेष रूप से तीसरी दुनिया के देशों में, विशेष रूप से वे जो गरीबी की स्थिति और उत्पीड़न और मताधिकार से वंचित होकर बाइबिल का पाठ पढ़ते हैं। यह संभवतः पाठ को उस तरीके से पढ़ेगा जो मूल लेखकों द्वारा इसे पढ़ने के तरीके के करीब होगा। अर्थात्, वे ऐसी स्थिति से पढ़ते हैं जो मूल बाइबिल पाठ और मूल पाठकों की स्थिति के बहुत करीब है।

इसलिए कभी-कभी किसी की पूर्वधारणाएं आवश्यक रूप से पाठ को विकृत नहीं करती हैं, बल्कि वे स्थिति, पाठ की मूल स्थिति, पाठकों की मूल स्थिति से मेल खाती हैं। यह उत्पादक और फलदायी हो सकता है। पाठ की व्याख्या करने के वर्षों में मैंने सबसे अधिक सीखा है, मैंने तीसरी दुनिया के देशों के अपने छात्रों से सबसे अधिक सीखा है, जिन्होंने बार-बार मुझे पाठ को पढ़ने के दौरान याद दिलाया है कि मैं पाठ को कैसे और कहाँ पढ़ सकता हूँ। 21वीं सदी के उत्तर अमेरिकी मध्यवर्गीय श्वेत पुरुष दृष्टिकोण का अपना।

और कभी-कभी यह उन लोगों को सुनकर होता है जो उत्पीड़न के परिप्रेक्ष्य से तीसरी दुनिया के देश से आते हैं, जो अव्यवस्था के स्थान से पढ़ रहे हैं, गरीबी की स्थिति से पढ़ रहे हैं। वे ऐसे स्थान पर हो सकते हैं जहां वे वास्तव में पाठ को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं क्योंकि वे ऐसी स्थिति और संदर्भ में हैं जो कई बार बाइबिल लेखकों के मूल संदर्भ से अधिक निकटता से मेल खाता है। और जबकि मैं, फिर से, यह मेरे स्वयं के पढ़ने में एक अंधे स्थान को उजागर कर सकता है जो यह प्रदर्शित कर सकता है कि मेरी अपनी संस्कृति और स्थिति, फिर से उत्तरी अमेरिकी पश्चिमी मध्यम वर्ग, सामाजिक-आर्थिक रूप से मध्यम वर्ग के माहौल में रहने से, मेरे पढ़ने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। मूलपाठ।

जो मुझे दूसरे तक भी ले जाता है, फिर मुझे अपनी पृष्ठभूमि में उन धारणाओं और पूर्वधारणाओं और मूल्यों को पाठ द्वारा चुनौती देने और सही करने की अनुमति देनी चाहिए, और मैं पाठ के अन्य पाठों के द्वारा भी कहूंगा, अन्य लोगों द्वारा जो इसमें हो सकते हैं कभी-कभी इसे सुनने के लिए एक बेहतर स्थिति। मुझे पाठ को चुनौती देने और सही करने की अनुमति देने के लिए उन लोगों के प्रति खुला रहना होगा। तीसरा, इसका मतलब यह है कि मुझे पाठ को विनम्रता से देखना चाहिए।

फिर से, आधिकारिक, अधिनायकवादी पाठन के लिए कोई जगह नहीं है जो केवल दूसरों पर मेरी शक्ति की पुष्टि और पुष्टि करता है और पाठ पढ़ने वाले अन्य लोगों को बाहर कर देता है। और अंत में, फिर से, जैसा कि मैंने कहा है, हमें सुनने की ज़रूरत है, हमें दूसरों के पाठों को

सुनने की ज़रूरत है। जब किसी पाठ की व्याख्या करने की बात आती है तो हमें अपनी अदूरदर्शिता को सुधारने के लिए दूसरों को पढ़ने की अनुमति देनी होगी।

इसलिए, फिर से, पाठक की प्रतिक्रिया आलोचना, जब सावधानी से उपयोग की जाती है, तो मुझे लगता है, व्याख्यात्मक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि हम, हमारी पृष्ठभूमि और प्रभाव तथा मूल्य और संस्कृति और यहां तक कि धार्मिक परंपराएं या समुदाय, जिनसे हम संबंधित हैं, हमारे पाठ पढ़ने के तरीके को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए पाठक प्रतिक्रिया आलोचना हमें विनम्रता की आवश्यकता, अन्य आवाज़ों को सुनने की आवश्यकता की याद दिलाती है, फिर भी हमें यह पहचानने की आवश्यकता है कि पाठ अभी भी हमें सही करने के लिए कार्य कर सकता है।

हमारे बाहर अभी भी अर्थ है जो हमारे सोचने के तरीके को बदल सकता है, चुनौती दे सकता है और सही कर सकता है। पाठक प्रतिक्रिया आलोचना, विशेष रूप से पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के अधिक कट्टरपंथी रूपों को तार्किक रूप से और भी आगे बढ़ाया जा सकता है और विशेष रूप से कट्टरपंथी पाठक प्रतिक्रिया आलोचना को तार्किक रूप से विखंडनवाद के रूप में जाना जाता है, यानी दृष्टिकोण जो पाठक दृष्टिकोण से भी आगे जाते हैं और पाते हैं कि वहाँ बस है वहाँ कोई मतलब ही नहीं है। अर्थ पूरी तरह से अस्थिर है, पाठ अस्थिर हैं, और परिणाम यह है कि अर्थ को बांधने के लिए कुछ भी नहीं है।

कोई केंद्र नहीं है। मतलब तब सबके लिए मुफ्त हो जाता है। कभी-कभी यह केवल पाठ के साथ खेलने और जो चाहे वह करने से थोड़ा अधिक होता है।

पाठक प्रतिक्रिया आलोचना के प्रति अधिक क्रांतिकारी दृष्टिकोण उस दिशा में आगे बढ़ना शुरू हो गया है। इसलिए अगले सत्र में हम व्याख्या के एक दृष्टिकोण के रूप में विखंडनवाद के बारे में बात करने में थोड़ा समय व्यतीत करेंगे जो फिर से उत्तर-संरचनावाद के अंतर्गत आता है। हम इसके आसपास के कुछ प्रमुख आंकड़ों को देखेंगे और यह भी पूछेंगे कि यह बाइबिल पाठ की व्याख्या और व्याख्या में क्या योगदान दे सकता है।

किन खतरों से बचना चाहिए? और बाइबिल पाठ के प्रति संक्षेप में वैचारिक दृष्टिकोण का परिचय भी दें। अर्थात्, हमने पहले ही इसका उल्लेख किया है, लेकिन कुछ स्थानों से पाठ पढ़ना और बाइबिल पाठ को उसकी विचारधारा, उन मूल्यों और दृष्टिकोणों की आलोचना करने के इरादे से पढ़ना, जिन्होंने इसे उत्पन्न किया। और फिर, विशेष रूप से, उदाहरण के लिए, बाइबिल पाठ के नारीवादी पाठन पर ध्यान केंद्रित करना।

और फिर, बस आपको यह बताने के लिए कि व्याख्याशास्त्र कहाँ जा रहा है और व्याख्या कहाँ जा रही है। और हमेशा यह पूछने पर आलोचनात्मक नज़र रखें कि उस दृष्टिकोण का मूल्य क्या हो सकता है, लेकिन साथ ही कमियाँ और खतरे भी। इसलिए अगले सत्र में हम विखंडनवाद की ओर रुख करेंगे और साथ ही व्याख्या के वैचारिक दृष्टिकोण पर भी विचार करेंगे।